ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 17 कुल पृष्ठ-8 15 से 21 सितम्बर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 भा. शु.-12

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रांतिकारी आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि पर विशाल संकल्प सभा एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया

स्वामी अग्निवेश जी मानव अधिकारों के प्रबल प्रवक्ता थे

– स्वामी आर्यवेश

देश के विभिन्न प्रान्तों से अनेकों नवयुवक स्वामी अग्निवेश जी एवं स्वामी इन्द्रवेश जी से प्रेरित होकर आर्य समाज से जुड़े

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी अग्निवेश जी बहुआयामी अद्भुत संन्यासी थे – डॉ. वेद प्रताप वैदिक

स्वामी अग्निवेश जी वैदिक सिद्धान्तों के लिए समर्पित रहे – आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद पताप वैदिक जी को वेद विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी को वेद विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया

स्वामी अग्निवेश की दूसरी पुण्यतिथि के अवसर पर 11 सितम्बर, 2022 को अग्निलोक आश्रम, बहलपा, गुरुग्राम में विशाल संकल्प सभा एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में हजारों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रो विट्ठलराव आर्य, विश्वविख्यात पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, युवा संन्यासी एवं प्रखर वैदिक प्रवक्ता स्वामी श्रद्धानंद जी, कर्मठ युवा संन्यासी स्वामी विजयवेश जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, संन्यास आश्रम गाजियाबाद के व्यवस्थापक स्वामी सूर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी, पूर्व विधायक चौधरी अजीत सिंह एडवोकेट, आर्य वीरदल के राष्ट्रीय संयोजक श्री भंवर लाल, युवा सामाजिक कार्यकर्ता श्री हवा सिंह हुड्डा, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा संयोजक बहन प्रवेश आर्या, सर्वधर्म संवाद के संयोजक श्री मनु सिंह, साध्वी अग्नयानन्दी जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा जिला–गुना मध्य प्रदेश की अध्यक्ष श्रीमती शशि अहीरवार जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा जिला–शिवपुरी, मध्य प्रदेश के अध्यक्ष गफ्फार खान, हिन्द मजदूर सभा के नेता श्री आर. डी. यादव, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कोषाध्यक्ष श्री विष्णुपाल, युवा व्यवसायी श्री मनोज कुमार सिंह आदि के अतिरिक्त श्री चांदमल आर्य जोधपुर, श्री हरदेव सिंह आर्य शिवगंज, श्री रामनिवास आर्य नारनौल, श्री सुरेन्द्र यादव रेवाड़ी, श्री बाबूलाल आर्य जूई भिवानी, श्री राजवीर वशिष्ठ, श्री अजयपाल आर्य, श्री रामफल कुंडू, श्री अनिल कुमार व श्री नारायण, मा. ऋषिराज शास्त्री, टिटौली, श्रीमती सुनीता खासा एवं श्रीमती सुषमा आर्या, कु. पूजा आर्या रोहतक, मास्टर श्री प्रदीप कुमार रोहतक, श्री रामशरण पाली, श्री मायाराम सूर्यवंशी, श्री काशीराम, श्री कैलाश, बहन कमला राव व बहन मोनिका, श्री अशोक कुमार दयानन्द कालोनी फरीदाबाद, श्री भानू प्रताप गढ़ी दिल्ली, श्री जगदीश आर्य एवं श्री ऋषिपाल बढ़ाना,

शेष पृष्ठ 4 पर

स्वामी अग्निवेश जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी स्मृति में गरीब, मजदूर परिवारों को कम्बल वितरित किये गये

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

''पितृ पक्ष का वैदिक पक्ष''

– सोम प्रकाश

आर्यजन देवों, ऋषियों एवं पितरों के चरित्र से प्रेरित होकर अपने दैनिक व्यवहारों को पूर्ण करते हुए सन्तति को ही नहीं अपितु मानव मात्र को भी सन्मार्ग के पथिक बनने की प्रेरणा देते हुए समाज में आदर्श उपस्थित किया करते हैं। प्राच्य ऋषियों ने परमपिता परमात्मा का वैदिक ज्ञान जन साधारण तक पहुंचाया। उसी ऋषि परम्परा में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने समाधिस्थ होकर ईश्वर साक्षात्कार करते हुए वेदज्ञान गंगा को अविरल रूप से प्रवाहित होते रहने के उद्देश्य से जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने यज्ञीय जीवन हेतु सभी के उपयोगार्थ अनेक ग्रन्थों की रचना करके सत्यार्थ को प्रकाशित किया। यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म। यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा जाता है। पांच यज्ञ दैनिक करने का विधान शास्त्रों में है। सभी आर्यजन ब्रह्म यज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ और बलिवैश्व देव यज्ञ से परिचित हैं।

पञ्च यज्ञों के सम्बन्ध में महर्षि मनु का कहना हैः-

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भोतौ नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।
(मनुस्मृति 3/70)

अर्थात् पढ़ना-पढ़ाना सन्ध्योपासना करना ब्रह्मयज्ञ है और ऋषि, देव, माता पिता आदि पितरों की सेवा सुश्रूषा तथा भोजनादि से तृप्ति करना पितृयज्ञ है। प्रातः सायं होम अर्थात् हवन करना देव यज्ञ है। मनुष्येतर प्राणियों अर्थात् कीटों, पक्षियों, कुत्तों तथा कुष्ठ व्यक्तियों, भृत्यों आदि आश्रितों के लिए भोजन देना भूतयज्ञ या बलिवैश्व देव यज्ञ कहलाता है अतिथियों को भोजन देना और सेवा द्वारा सत्कार करना अतिथि यज्ञ या नृयज्ञ कहलाता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' तथा 'पञ्च महायज्ञ विधि' में उपर्युक्त पञ्च यज्ञों के सम्बन्ध में विषद व्याख्या प्रस्तुत की है पितृ यज्ञ के दो भेद हैं- एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध। जिस कर्म से विद्वान रूप देव, ऋषि और पितरों को सुखयुक्त करते हैं उसे 'तर्पण' कहते हैं। उसी प्रकार उन व्यक्तियों की श्रद्धा से सेवा करना 'श्राद्ध' कहलाता है। महर्षि के अनुसार ''तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जो प्रत्यक्ष हैं, उन्हीं में घटता है मृतकों मेंनहीं क्योंकि उनकी प्राप्ति और उनका प्रत्यक्ष होना असम्भव है। इसी से उनकी सेवा भी किसी प्रकार से नहीं हो सकती किन्तु जो उनका नाम लेकर देवे वह पदार्थ उनको कभी नहीं मिल सकता। इसलिए मृतकों को सुख पहुंचाना असम्भव है। इसी कारण विद्यमानों के अभिप्राय से तर्पण और श्राद्ध वेद में कहा है। सेवा करने योग्य और सेवक अर्थात् सेवा करने वाले इनके प्रत्यक्ष होने पर यह सब काम हो सकता है।'' तर्पण श्राद्ध आदि कर्म में सत्कार करने योग्य तीन हैं यथा देव, ऋषि और पितर।

शतपथ के अनुसार विद्वांसो हि देवाः अर्थात् सत्यधारी विद्वान ही देव कहलाते हैं। दो लक्षणों के पाये जाने से मनुष्यों की दो संज्ञा होती है अर्थात् एक देव और दूसरी मनुष्य। सत्य भाषण, सत्य स्वीकार और सत्य कर्म करने वाले देव कहलाते हैं। सत्यव्रत आचरण करने वाले देव कीर्तिमानों में भी कीर्तिमान होकर सर्वदा आनन्द में रहते हैं परन्तु उनसे विपरीत आचरण करने वाले मनुष्य दुःख को प्राप्त होकर प्रतिदिन पीड़ित ही रहते हैं।

ऋषयों मन्त्रद्रष्टारः अर्थात् वेद मन्त्रों के अर्थ जानने वाले ऋषि कहलाते हैं।

पितरों की कोटि में निम्नलिखित हैं- सोमसद्, अग्निष्वात्ता, बर्हिषद्, सोमपा, हविर्भुज, आज्यपा, सुकालिन, यमराज, पितृ, पितामह, प्रपितामह, मातृ, पितामही, प्रपितामही, सगोत्र, आचार्य तथा सम्बन्धी आदि। महर्षि ने पितरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है ''जो ईश्वर और सोमयज्ञ में निपुण और जो शान्त्यादिगुण सहित हैं वे सोमसद् कहाते हैं। अग्नि जो परमेश्वर वा भौतिक उनके गुण ज्ञात करके जिनने अच्छे प्रकार अग्निविद्या सिद्ध की है, उनको अग्निष्वात्ता कहते हैं। जो सबसे उत्तम परब्रह्म में स्थिर होके शम दम सत्य विद्यादि उत्तम गुणों में वर्तमान हैं, उनको बर्हिषद् कहते हैं। जो यज्ञ करके सोमलतादि उत्तम औषधियों के रस के पान करने और कराने वाले हैं, तथा जो सोमविद्या को जानते हैं, उनको सोमपा कहते हैं। जो अग्निहोत्रादि यज्ञ करके वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा सब जगत् का उपकार करते, और जो यज्ञ से अन्नजलादि की शुद्धि करके खाने पीने वाले हैं उनको हविर्भुज कहते हैं। आज्य कहते हैं घृत स्निग्धपदार्थ और विज्ञान को।

जो उसके दान से रक्षा करने वाले हैं उनको आज्यपा कहते हैं। मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर ईश्वर और सत्यविद्या के उपदेश का जिनका श्रेष्ठ समय और जो सदा उपदेश में ही वर्तमान हैं उनको सुकालिन कहते हैं। जो पक्षपात को छोड़के सदा सत्य न्याय व्यवस्था ही करने में रहते हैं, उनको यमराज कहते हैं। जो वीर्य के निषेकादि कर्मों को करके उत्पत्ति और पालन करने और चौबीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्याश्रम से विद्या को पढ़े उसका नाम पिता और वसु है। जो पिता का पिता हो और चवालीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य से विद्याभ्यास कर पक्षपात रहित होकर दुष्टों को रूलाने वाला है। उसका नाम पितामह है। जो पितामह का पिता और आदित्य के समान उत्तम गुणों का प्रकाशक अड़तालीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्याश्रम से विद्या पढ़के सब जगत् का उपकार करता हो, उसको प्रपितामह और आदित्य कहते हैं तथा जो पित्रादिकों के तुल्य पुरुष हैं उनकी भी पित्रादिकों के तुल्य सेवा करनी चाहिए। पित्रादिकों के समान विद्या स्वभाव वाली स्त्रियों की भी अत्यन्त सेवा करनी चाहिए। जो समीपवर्ती ज्ञाति के योग्य पुरुष हैं, वे भी सेवा करने के योग्य हैं। जो पूर्ण विद्या के पढ़ाने वाले, श्वसुरादि सम्बन्धी तथा उनकी स्त्री हैं उनकी यथायोग्य सेवा करनी चाहिए।''

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत् में पितॄन्।।
(यजु. 19/58)

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में पञ्चमहायज्ञ विषय के अन्तर्गत महर्षि ने उपर्युक्त मन्त्र का अर्थ इस प्रकार किया है-

''पिता वा स्वामी अपने पुत्र, पौत्र स्त्री और नौकरों को इस प्रकार आज्ञा देवे कि जो जो हमारे मान्य पिता, पितामहादि, माता, मातामहादि और आचार्य तथा इनसे भिन्न भी विद्वान लोग, जो अवस्था वा ज्ञान में बड़े और मान्य करने योग्य हैं तुम लोग उनकी उत्तम-उत्तम जल, रोगनाश करने वाले उत्तम अन्न, सब प्रकार के उत्तम फलों के रस आदि पदार्थों से नित्य सेवा किया करो, कि जिससे वे प्रसन्न होके तुम लोगों को सदा विद्या देते रहें। क्योंकि ऐसा करने से तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहोगे और ऐसा विनय सदा रक्खो कि हे पूर्वोक्त पितर लोगों! आप हमारे अमृतरूप पदार्थों के भोगों से तृप्त होइये, और हम लोग जो जो पदार्थ आप लोगों की इच्छा के अनुकूल निवेदन कर सकें, उन-उन की आज्ञा किया कीजिए। हम लोग मन, वचन, और कर्म से आपके सुख करने में स्थित हैं, आप किसी प्रकार का दुःख न पाइये। क्योंकि जैसे आप लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्याश्रम में हम लोगों को सुख दिया है वैसे ही हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना अवश्य चाहिए, कि जिससे हम लोगों को कृतघ्नता दोष न प्राप्त हो।''

यज्ञोपवीत के तीन सूत्र ऋषि ऋण, देव ऋण और पितृऋण से उऋण होने की स्मृति दिलाते हैं। आर्यजन तीनों प्रकार के ऋणों से उऋण होने के लिए ऋषियों, देवों और पितरों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के पक्ष में रहे हैं। वे न तो कभी उनके विपक्ष में रहे और न कभी विरोध में रहेंगे। विरोध तो अनार्यों द्वारा किया जाता है आर्यों द्वारा नहीं। पितरों में श्रद्धा रखनी चाहिए। पितरों का तर्पण और श्राद्ध करना सभी का कर्त्तव्य है।

दिवंगत माता पितादि के चरित्र को श्रद्धापूर्वक धारण करके आचरण करना भी श्राद्ध की कोटि में आता है। दैनिक पञ्चमहायज्ञ करना प्रत्येक द्विज का कर्त्तव्य है। पितरों की सेवा सुश्रूषा करना सभी का धर्म है। जब व्यक्ति सेवा करने को तत्पर हो और बिना कहे ही उनकी सुख सुविधाओं को पूर्ण करके तृप्त कर दे तो समझो पितृतर्पण हो रहा है। इसी प्रकार उनकी श्रद्धा से सेवा करना श्राद्ध है। जिस परिवार में दैनिक यज्ञ होता है वह कुल धन्य है।

पौराणिक बन्धु दैनिक न सही किन्तु वे वर्ष में दो सप्ताह आश्विन कृष्णपक्ष अर्थात् पितृपक्ष के समय तो पितरों में श्रद्धा रखते हुए श्राद्ध करते ही हैं। इसमें किञ्चित अन्तर यह है कि जीवित पितरों को यहां स्थान प्राप्त नहीं हो पाया अर्थात् यह पितृपक्ष मात्र मृतक पितरों की श्रद्धा तक ही सीमित बनकर रह गया है। यह बहुत शोक का विषय है। क्या अच्छा हो यदि सभी व्यक्ति दुराग्रह त्याग कर वैदिक पथ के अनुगामी होकर धर्म की मूल भावना को हृदयंगम करके इहलोक और परलोक को सफल बनाने के लिए पितृपक्ष में ही सही पितरों के पक्ष में दृढ़व्रत लें अर्थात् पितृपक्षी हो कदापि पितरों से विमुख न हों। परमपिता परमात्मा कहता है- अनव्रतः पितुः पुत्रः अर्थात् पुत्र पिता का अनुव्रती हो। यदि पुत्र पिता का अनुव्रती होगा तो पुत्र की सन्तान भी उसका अनुगमन करने वाली होगी। इस प्रकार से सनातन चली आ रही वैदिक परम्परा का निर्वहन अबाधगति से भविष्य में भी होता रहेगा इसमें किञ्चित भी सन्देह नहीं।

संसार के भौतिक पदार्थों का संचय अर्थ से सम्भव है अर्थात् सुख सुविधाएं धन से क्रय की जा सकती हैं परन्तु पितरों का आशीर्वाद क्रय नहीं किया जा सकता। यदि पितर श्रद्धापूर्वक प्रदान किये गये पदार्थों अर्थात् श्राद्ध कर्म से तृप्त होंगे तो निश्चय ही उनके श्रीमुख से शुभाशीर्वाद की वर्षा होगी और उनके तर्पण से सन्तति को भी पितृऋण से उऋण होने की अवस्था प्राप्त होगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार वैसे तो श्राद्ध कर्म दैनिक करना योग्य है परन्तु यदि ऐसा कभी सम्भव न हो तो प्रत्येक अमावस्या को तो श्राद्ध कर्म अवश्य करना चाहिए।

- वैयक्तिक सहायक जनपद न्यायाधीश, गाजियाबाद

राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत – महर्षि दयानन्द सरस्वती

– स्व. आचार्य राजेन्द्र शर्मा

14 अगस्त, 1947 को रात्रि 12 बजे का समय और पराधीनता के पाश का टूटना और 15 अगस्त, 1947 का प्रारम्भ तथा स्वतंत्रता देवी का देश के प्रांगण में शुभागमन। हिमालय के शिखरों ने अभिनन्दन किया, हिन्द महासागर ने चरण प्रक्षालन किया, अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी ने अपनी तरंगों से अभिषेक किया। सम्पूर्ण जनमानस पुलक उठा। हर्षोल्लास जाग उठा। चारो ओर दिग्दिगंत में स्वागतम् – स्वागतम् का निनाद गूंज उठा। बालक किलक रहे थे। युवक उत्साहित हो रहे थे। वृद्ध आशा और विश्वास भरे अतीत को झांक रहे थे तथा भविष्य के स्वप्न सजा रहे थे। जय–जय के घोषों से सम्पूर्ण देश अभिनन्दन कर रहा था अवतरित स्वतंत्रता देवी का। भारत का राष्ट्रध्वज शान से लहरा रहा था। 'अपने देश में अपना राज' का स्वप्न साकार हुआ।

कितना लम्बा संघर्ष, कितनी लम्बी प्रतीक्षा और कितना त्याग बलिदान करना पड़ा, तब देश को अस्मिता प्राप्त हुई और हमारा मस्तक ऊँचा हुआ। इस स्वातंत्र्य संग्राम की सफलता में जिन महापुरुषों ने जीवन योगदान दिया। जिन्होंने समग्र देश में स्वाधीनता की लहर को उठाने का प्रयास किया और जिन्होंने जनमानस में राष्ट्रीय चेतना प्रज्ज्वलित कर स्वतंत्रता की ज्वाला को जलाया उन महापुरुषों में महर्षि स्वामी दयानन्द का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। वे नव–जागरण के पुरोधा थे। राष्ट्रचेतना के अग्रदूत थे और स्वतंत्रता संग्राम के दूरदर्शी सेनानी थे। उन्होंने अपनी प्रखर राष्ट्रवादी विचारधारा द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद को एक नया मोड़ दिया। प्रसुप्त चेतना को जगाया। उनके प्रयास से देश की जड़ता समाप्त हुई। जागृति आई, और भारत का नव–प्रभात अंगड़ाई लेने लगा। महर्षि दयानन्द जी ने गंगा, यमुना, नर्मदा और कावेरी के इस देश के नव–निर्माण के स्वप्न को साकार करने का सफल प्रयास किया।

एक प्रसिद्ध समाज शास्त्री ने लिखा है कि जीवन एक ललकार है, चैलेंज है, आह्वान है। साधारणजन ललकार सुनकर भाग खड़े होते हैं। महापुरुष उसका अदम्य साहस से सामना करते हैं। चैलेंज का जवाब देते हैं। संघर्ष से पीठ नहीं दिखाते। अपितु समस्याओं से जूझकर प्राणों की बाजी लगाकर जमाने को पलट देते हैं। महर्षि जीवन एक लोकोत्तर महापुरुष का जीवन था। आशा, विश्वास से भरा पूरा उत्साह, उमंग से छलछलाता, धैर्य और साहस से जगमगाता, दूरदर्शिता और गहन चिन्तन से लहलहाता उनका जीवन था जिसने देश का कायाकल्प कर दिया।

महर्षि जब कर्म क्षेत्र में अवतरित हुए, चारो ओर ललकार थी। सबसे बड़ा चैलेंज था विदेशी दासता का। महर्षि की आत्मा ने निर्णय लिया कि मुझे इस दासता को उखाड़ फेंकना है। उनके समस्त कार्यक्रम, उनकी समस्त विचारधारा और उनके समस्त आन्दोलनों का सार था देश की स्वतंत्रता। प्रवृद्ध तथा पबुद्ध चेतना से ओत–प्रोत एक युवक अन्धविश्वास तथा रुढ़िवादिता के दुष्चक्र से अपने आपको निकालकर सच्चे शिव की खोज के दृढ़ संकल्प को लेकर माया, ममता का त्याग कर निकल पड़ते हैं। अपने संकल्प की पूर्ति हेतु देश के विभिन्न स्थानों पर जाते हैं, सम्पर्क स्थापित करते हैं और जन–जन को देखने और परखने का उनको अवसर मिलता है। सूक्ष्म तत्त्व की लालसा से सम्पन्न उस युवक के पारदर्शी नेत्र वाह्य परिस्थितियों के अनुभवों के प्रति बन्द रहे हों, यह सम्भव नहीं है। महर्षि ने उस परिभ्रमणकाल में सच्चे शिव को तो नहीं पाया। परन्तु समाज और देश में चारो ओर फैले हुए अशिव के दर्शन उन्होंने अवश्य किये। उन्होंने धर्म और राजनीति के नाम पर फैले हुए अंधविश्वासों को देखा, देश की अशिक्षा, दरिद्रता, पीड़ा, कराहट, चारित्रिक पतन तथा कायरता को देखा। अंग्रेजों के अत्याचार देखे, देश की शारीरिक ही नहीं मानसिक दासता को देखा। उन्होंने देखा कि देश की अस्मिता कहीं खो गई है और देश का जन–आहार, निद्रा, भय, मैथुन में ग्रस्त पशुवत जीवन जी रहा है। इसका कारण उन्होंने माना चार सदी की दासता। और उसकी समाप्ति के लिए उन्होंने अपने को आहूत किया।

पराधीनता की पीड़ा उनके मर्म को चीरती रहती थी। उसकी वेदना उनको व्यग्र बनाती रहती थी। देश की पीड़ा उनकी पीड़ा बन गई थी, परिणामतः उनकी वाणी से निकला प्रत्येक शब्द श्रवणकर्ता के मन में प्रखर राष्ट्र चेतना भर देता था। उनकी लेखनी से अंकित एक–एक शब्द राष्ट्रभक्ति का मंत्र फूंक देता था। स्वाधीनता के प्रति उनकी तड़प, उनके ग्रंन्थों, उनके भाषणों, उनके पत्र व्यवहारों और उनकी प्रार्थनाओं में सर्वत्र दिखाई देती है।

महर्षि घोषणा करते हैं – 'स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है'। हार्दिक पीड़ा से लिखते हैं कि – 'आर्यों का अखण्ड, स्वतंत्र, निर्भय, स्वाधीन राज्य नहीं है जो थोड़े से राज्य हैं वे विदेशियों से पदाक्रान्त हैं।' 1873 में इस देश के गर्वनर जनरल लॉर्ड नार्थ ब्रुक से वे निर्भयता पूर्वक कहते हैं कि – 'मैं तो सायं प्रातः ईश्वर से यह प्रार्थना किया करता हूँ कि इस देश को विदेशियों की दासदा से शीघ्र मुक्त करें।' अदीनाः स्याम शरदः शतम् को विनियुक्त कर महर्षि ने जन–जन में स्वतंत्रता के प्रेम को जागृत करने का अभिनव प्रयोग किया।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

1857 का प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम उन्होंने देखा ही नहीं था अपितु तथ्य उद्घाटित करते हैं कि राष्ट्रभक्त दयानन्द उस चिंगारी को प्रज्ज्वलित करने में संलग्न रहे और उस संग्राम का उन्होंने नेतृत्व किया था। प्रयास विफल हुआ। अंग्रेजों ने अमानुशिक अत्याचार किये, भय और आतंक का राज्य छा गया। हताशा के इस वातावरण में महर्षि को सान्निध्य मिला प्रज्ञा चक्षु विरजानन्द जी का और उनके उन गुरुवर ने उनको मांज कर निखार दिया। कुन्दन बना दिया और महर्षि देश का सर्वांगीण कायाकल्प करने हेतु एक नवीन तेजस्विता और दृढ़ संकल्पशीलता के साथ कार्यक्षेत्र में उतर पड़े। अंग्रेजों के अत्याचारों ने राष्ट्र की चेतना को निर्ममता से कुचल दिया था। राष्ट्रभक्ति की भावना को क्रूरता पूर्वक दबा दिया था। हताशा, निराशा और उत्साहहीनता के इस माहौल में उन्होंने अपनी वाणी और लेखनी के माध्यम से भारत महिमा का, आत्म–गौरव का बखान किया और स्वदेश भक्ति का पाठ पढ़ाया। आर्यों के अखण्ड चक्रवर्ती राज्य की प्रार्थनाएँ की और गौरवमय अतीत का स्मरण कराया। इस प्रकार उन्होंने कुचली चेतना को जगाने का सफल प्रयास किया।

महर्षि के अंग–अंग में राष्ट्रीयता जगमगा रही थी, उनके द्वारा किये गये समस्त कार्यों का अन्तिम लक्ष्य स्वाधीनता ही था। आर्यों के अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के वे स्वप्न देखा करते थे। इसी राष्ट्रीय चेतना को उन्होंने आर्य समाज तथा अपने भक्तों में भरा था। उस समय का प्रत्येक आर्य राष्ट्रभक्ति का जलता हुआ अंगारा था। इसीलिए एक प्रसिद्ध अंग्रेज ने कहा था कि – 'किसी भी आर्य समाजी की खाल को खुरचकर देखो तो वहाँ क्रांतिकारी दयानन्द लिखा होगा।' उन्होंने एक ऐसी जीवन पद्धति दी जिसमें से निकला व्यक्ति आत्मसंयमी, दृढ़निश्चयी, प्रखर देशभक्ति से भरा हुआ और –'माँ प्रगाम यथो वयम्' की भावना से युक्त होता था। राष्ट्रे वयम् जागृयाम् की प्रबल आकांक्षा उसमें होती थी।

राष्ट्रीय क्रांति, सामाजिक क्रांति, राजनीतिक क्रांति, धार्मिक क्रांति महर्षि का तेज सबको गति दे रहा था। राष्ट्रीय जागरण के सभी स्तरों की पृष्ठभूमि उन्होंने दृढ़ता से निर्मित की थी। महर्षि चतुर्मुखी जागरण के आद्य प्रवर्तक थे। लोकसभा के अध्यक्ष रहे श्री अनन्त शयनम अयंगर ने कहा था कि 'गाँधी जी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे।' उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज आन्दोलन था जो उनकी प्रेरणा के अनुसार धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय पुनर्जागरण को लेकर चला। प्रत्येक आर्य समाज एक ऐसा स्वतंत्रता केन्द्र था जहाँ शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक रूप से सबल, सशक्त, संकल्पयुक्त, देशभक्त निर्मित होते थे जो रुकना, झुकना नहीं जानते थे और स्वतंत्रता यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए सदा कटिबद्ध रहते थे। महर्षि के निर्देशित पथ के पथिक बनकर आज भी हम स्वराज्य को सुराज में परिणित कर सकते हैं जिसकी आज महती आवश्यकता है।

– आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली–92

सुन्दर शिक्षित वधुएँ चाहिए

आर्य जाट, गोत्र तोमर गौर वर्ण 5 फुट 8 इंच तथा 6 फुट 1 इंच उम्र क्रमशः 30 वर्ष तथा 28 वर्ष के दोनों सगे भाई इंजीनियरिंग डिग्री धारक हैं तथा दोनों भाई बैंक में अस्सिटेंट मैनेजर हैं। सम्पन्न परिवार से सम्बन्धित इन दो सगे भाईयों के लिए सुन्दर सुयोग्य व आर्य विचारों वाली वधू चाहिए। विवाह पूर्णतः दहेज रहित रहेगा।

सम्पर्क सूत्र
ब्रजपाल सिंह आर्य (आर्य महोपदेशक)
ग्राम व पो.–फजलपुर, निकट बिनौली, तह.–बड़ौत
जिला–बागपत–250345 (उत्तर प्रदेश)
मो.:–8383800821, 7060150375

पृष्ठ 1 का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रांतिकारी आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि पर विशाल संकल्प सभा एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया

स्वामी अग्निवेश जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने उद्गार व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी

वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी बोलते हुए

वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी बोलते हुए

श्री मकेन्द्र कुमार फरीदाबाद, श्री अभिषेक आर्य, श्री ललन राय, श्री धर्मेन्द्र कुमार, श्री घनश्याम मुरारी, श्री सोनू तोमर, श्री जावेद, श्री ऋषिपाल शास्त्री दिल्ली आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। प्रातः 9 से 10 बजे तक आचार्य योगेश कुमार प्रधानाचार्य गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया तथा स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी विजयवेश जी ने यजमान के रूप में आहुतियाँ प्रदान कीं। यज्ञ के उपरान्त आचार्य योगेश कुमार ने अपने प्रवचन के द्वारा स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि दी तथा उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा प्राप्त लेने के लिए लोगों से अपील की। यज्ञ के उपरान्त कार्यक्रम मंच से चला और कार्यक्रम कुशल संचालन स्वामी आदित्यवेश जी ने किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी तथा वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद पताप वैदिक जी को वेद विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप दोनों विद्वानों को 51–51 हजार रुपये की राशि, सम्मान पत्र तथा शॉल भेंट किये गये।

सम्मान के उपरान्त विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये। स्वामी विजयवेश जी ने पुराने संस्मरण सुनते हुए बताया कि स्वामी जी से सबसे पहले मैं सन् 1968 में मिला और उसके पश्चात् मैं नेतृत्व में कार्य करता रहा। उनके कार्यों को आगे बढ़ाना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

जोधपुर से पधारे आर्य वीर दल के राष्ट्रीय संयोजक श्री भंवर लाल आर्य जी ने श्रद्धांजलि देते हुए उनके कार्यों का विश्लेषण करते हुए कहा कि उनका देहावसान नहीं हुआ उनका बलिदान हुआ है। जिसकी न्यायिक जांच करवानी चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजनन्द जी ने अपनी ओर से श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी से मेरा परिचय लगभग 50 वर्ष पूर्व से रहा है। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने महिलाओं के लिए विशेष कार्य करते हुए समाज में फैली अनेक कुरीतियों से लड़ते रहे। बंधुआ मुक्ति मोर्चा के माध्यम से लाखों मजदूरों को मुक्त कराया। हरिजनों का नाथद्वारा मंदिर में प्रवेश कराया।

इस अवसर पर सामाजिक नेता श्री हवा सिंह हुड्डा जी ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी जी ने हमेशा समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की आवाज बनकर अपने विचार रखते रहे।

इस अवसर पर बंधुआ मुक्ति मोर्चा के संगठन मंत्री श्री मनु सिंह जी ने अपना भाषण स्वामी अग्निवेश जी के नारों को बुलवाकर प्रारंभ किया।

'कमाने वाला खायेगा लूटने वाले जाएगा, नया जमाना आएगा।' उन्होंने कहा कि इतिहास को खंगाला जाए तो स्वामी अग्निवेश जी का जीवन पूरी तरह क्रांतिकारी था। स्वामी जी बड़े–बड़े नेताओं को कड़े से कड़े शब्दो में अपने विचार लिखकर भेजते थे। उन्होंने पोप को पत्र लिखा कि धर्मांतरण बंद होना चाहिए। स्वामी जी ने सऊदी अरब के राजा को शर्त रखकर उन्हें सत्यार्थ प्रकाश और वेद भेंट किये जबकि उस देश में अन्य धर्म की पुस्तक ले जाना प्रतिबंधित है। उन्होंने कई स्थान पर पशु बलि प्रथा को बंद करवाने का कार्य किया। इन कुरीतियों के खिलाफ लड़ाई लड़ते समय उन पर कई बार कातिलाने हमले भी हुए, परन्तु वे कभी पीछे नहीं हटे।

श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद जी ने कहा कि आज हम सब स्वामी अग्निवेश जी की दूसरी पुण्यतिथि के अवसर पर प्रेरणा सभा में प्रेरणा लेने के लिए उपस्थित हुए हैं। उन्होनें स्वामी अग्निवेश जी के कार्यों को बताते हुए कहा कि स्वामी जी ने बंधुआ मुक्ति मोर्चा का गठन करके मजदूरों की लड़ाई लड़ी। सर्वप्रथम उन्होंने ही कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ आवाज उठाते हुए वर्ष 2005 में टंकारा से अमृतसर तक बेटी बचाओ जन चेतना यात्रा निकाली। वे हमेशा वसुधैव कुटुम्बकम की आवाज उठाते थे।

बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्य ने स्वामी अग्निवेश जी को नमन करते हुए कहा कि आज मैं उस सीता देवी माता को भी नमन करती हूँ जिन्होंने ऐसे क्रांतिकारी बेटे को जन्म दिया। आज हम गर्व से कहते हैं कि आज हमारी जो पहचान है वह स्वामी अग्निवेश जी की वजह से है।

चौधरी अजीत सिंह जी पूर्व विधायक ने अपनी ओर से श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी जी जब कहीं बोलते थे तो नारे अवश्य लगवाते थे। उनके द्वारा बोले जाने वाले कुछ नारों को आज मैं बोलता हूं आप भी बोलें ''आर्य राष्ट बनाएंगे, भ्रष्टाचार मिटायेंगे।'' उन्होंने कहा कि स्वामी जी के सपनों को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए। देश से भ्रष्टाचार एवं अन्य बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़नी चाहिए यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी अग्निवेश जी को इतिहास पुरूष बताया। उन्होंने कहा कि वे हमेशा सच को स्वीकार करते थे और कभी भी सिद्धान्तों से समझौता नहीं करते थे। उन्होंने कहा कि उनके नाम के साथ जो अग्नि शब्द जुड़ा है वह सही मायने में सच साबित हुआ। हम आज भी नहीं मानते कि वे इस दुनिया में नहीं हैं, उनकी ऊर्जा और जीवटता आज भी हमारे दिलों में जिंदा है।

अगले पृष्ठ पर जारी

पिछले पृष्ठ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रांतिकारी आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि पर विशाल संकल्प सभा एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया

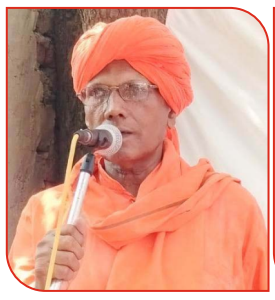
स्वामी श्रद्धानन्द जी

स्वामी आदित्यवेश जी

श्री बिरजानन्द जी

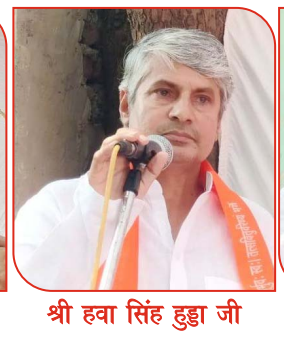
श्री हवा सिंह हुड्डा जी

श्री भंवर लाल जी

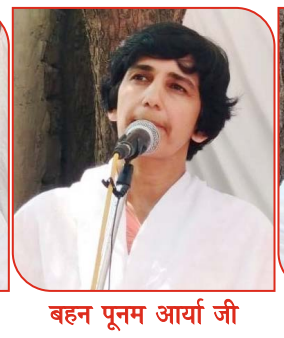
बहन पूनम आर्या जी

बहन प्रवेश आर्या जी

सार्वदेशिक सभा के महामंत्री प्रो विट्ठलराव आर्य जी ने स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि दक्षिण भारत के विभिन्न प्रान्तों में जब स्वामी अग्निवेश जी और स्वामी इंद्रवेश जी आते थे तो वहां के अनेक नवयुवक उमड़ पड़ते थे। स्वामी अग्निवेश जी जब बोलते थे तो जज्बा खड़ा कर देते थे। वे कहते थे वेद सबका है, पूरी दुनिया का है। आज के समय में ऐसा कोई व्यक्ति भारत में नहीं है जो सच बोल सके। स्वामी अग्निवेश जी सही मायने में स्वामी दयानंद जी के सिपाही थे। उन्होंने बंधुआ मजदूरों के लिए अनेक कार्य किये। स्वामी जी कहते थे कि सिर्फ हंगामा खड़ा करना हमारा मकसद नहीं अपितु बुराइयों के विरुद्ध आग जलनी चाहिए। आज स्वामी जी की कमी निश्चित ही खल रही है। क्योंकि स्वामी अग्निवेश जी ने आजाद भारत में आर्य समाज द्वारा चलाए गए ऐतिहासिक आंदोलनों में अग्रणी नेता की भूमिका निभाई। उन्होंने सती प्रथा के विरुद्ध कानून बनवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुंभ मेले के अवसर पर लगातार वेद प्रचार कार्यक्रमों का आयोजन स्वामी अग्निवेश जी तथा स्वामी इंद्रवेश जी के नेतृत्व में हुआ। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की विचारधारा को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने 'आर्य सभा' नाम की राजनीतिक पार्टी बनाई। महिलाओं को वेद पढ़ने के अधिकार पर शंकराचार्य को चुनौती, शराबबंदी आंदोलन, बेटी बचाओ अभियान, विश्व इतिहास में पहली बार आर्य समाज के बैनर तले विश्व वेद सम्मेलन का आयोजन जिसमें पौराणिक, इस्लामिक, ईसाई, बौद्ध, बहाई तथा वैज्ञानिक भी वेद के ऊपर अपने विचार रखने के लिए पहुंचे। इसी कार्यक्रम में मनुस्मृति पर खुले शास्त्रार्थ की चुनौती भी दी गई। जिसमें आर्य समाज की विजय हुई। रोहतक के विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर रखने में भी स्वामी अग्निवेश जी ने अहम भूमिका निभाई। वे सदैव गरीब एवं मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहे। इसलिए जब–जब इन ऐतिहासिक आंदोलनों को याद किया जाएगा तब–तब स्वामी अग्निवेश जी को भी याद किया जाएगा।

विश्व विख्यात विद्वान आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी ने स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी हमेशा अंधेरा को चीरते हुए समाज को दिशा देने का कार्य करते थे। उन्होंने कहा कि स्वामी जी की मूल भावना वेद पर आधारित थी। वे हमेशा वेद के आधार पर ही विश्व के सामने अपनी बात रखते थे। उन्होनें कहा जब पूरा विश्व वेद के विरुद्ध चलता था उस समय स्वामी दयानंद का जन्म होता है और वह वेद की पुनर्स्थापना के लिए लग जाते हैं उनके उसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए स्वामी इंद्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी एक वीणा के दो तार के समान झंकृत करते रहे।

विश्व विख्यात पत्रकार डॉ वेद प्रताप वैदिक जी ने स्वामी अग्निवेश जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आजाद भारत में स्वामी अग्निवेश जी के अलावा मुझे कोई दूसरा व्यक्ति नहीं दिखा जो अंतिम व्यक्ति के उत्थान के लिए वेद को आधार मानकर कार्य करता हो। उन्होंने कहा कि स्वामी जी के अनेक संस्मरण मेरे हृदय में हैं। वे निर्भीक संन्यासी थे, कभी किसी से डरते नहीं थे। वैदिक जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी आर्य समाज के सच्चे नेता और स्वामी दयानंद जी के सच्चे अनुयायी थे। वे हमेशा स्वामी दयानंद जी के विचारों को देश विदेश में क्रांतिकारी तरीके से प्रचारित करते थे। स्वामी जी हमेशा सभी को आर्य परम्परा से जोड़ने का प्रयास करते रहे। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी का लक्ष्य सारे संसार का उपकार करने की भावना रही।

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धांजलि सभा में उपस्थिति अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद प्रकट किया तथा स्वामी अग्निवेश जी महाराज को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि जिन साथियों ने जो कुछ भी कहा उससे मैं सहमत हूँ। स्वामी जी ने उनके जन्म से लेकर लालन पालन, शिक्षा, दीक्षा और संन्यास तथा उसके आगे के सफर को संक्षिप्त रूप में सुनाया। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि वे कहते थे कि न जाने किस भाग्य से हम और स्वामी इंद्रवेश जी मिले। वे कहते थे कि मैं अपने वेतन का कुछ भाग देना चाहता था, लेकिन स्वामी इंद्रवेश जी बोले इससे काम नहीं चलेगा आपको अपना पूरा जीवन लगाना होगा, हम सबको समाज में बडा कार्य करना है। उन्होंने 29 वर्ष की आयु में संन्यास लिया और स्वामी इंद्रवेश जी उस समय 31 वर्ष के थे। दोनों आंदोलन के कारण जेल में बंद थे। लेकिन जेल से ही ऐलान कर दिया था कि अब संन्यास लेकर कार्य करेंगे। संन्यास के समय भावुकता भरा भाषण दिया और अपनी माता से कहा कि अब यह श्यामराव केवल आपका ही बेटा नहीं है बल्कि करोड़ों माताओं का बेटा है। सती प्रथा की देवराला यात्रा का संस्मरण सनसनीखेज तरीके से सुनाया जिसे सभी लोग शान्त चित्त होकर सुनते रहे। स्वामी अग्निवेश जी ने सती प्रथा के खिलाफ कानून बनवाने का कार्य किया। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामी आर्यवेश जी ने सुप्रीम कोर्ट के 10 सितम्बर, 2022 के आदेश की घोर निंदा की जिसमें कोर्ट ने कहा है कि देश में कोई बंधुआ मजदूर नहीं हैं, जबकि आज देश का हर वह नागरिक बंधुआ है जिसे न्यूनतम मजदूरी नहीं मिलती।

श्रद्धांजलि सभा के अंत में अनेक साथियों तथा गरीब, मजदूर परिवारों को कम्बल तथा अन्य सामग्री देकर सम्मानित किया गया। श्रद्धांजलि सभा का कार्यक्रम शांति पूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसे सभी ने ग्रहण किया।

आर्य समाज का विजय पर्व

भारतीय संघ में हैदराबाद राज्य का विलीनीकरण और आर्य समाज की भूमिका

— मनुदेव अभय

वेद के अनुयायी और उसके प्रचारकों को सदैव ही संघर्ष करना पड़ा। इसी संघर्ष की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी 'हैदराबाद आर्य सत्याग्रह' (1939) है। कतिपय विद्वान् इस महान् एवं सफल सत्याग्रह को ''हैदराबाद में धर्मयुद्ध'' नामक संज्ञा से भी सम्बोधित करते हैं। वस्तुतः यह हमारे गौरवपूर्ण इतिहास का अति महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसे पढ़कर हमारी आने वाली पीढ़ी गर्व से आत्माभिमान अनुभव करेगी।

हैदराबाद (तत्कालीन दक्षिण) आर्य सत्याग्रह वस्तुतः एक युद्ध था जिसे हैदराबाद राज्य में आर्य समाज के अधिकारों और वैदिक धर्म के प्रचार स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए लड़ा गया था। प्रामाणिक तथ्यों के अनुसार आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा निरन्तर छः वर्ष तक वैध उपायों से इस समस्या के हल का प्रयत्न किया गया था, किन्तु जब ये सारे उपाय निष्फल हो गए, तब निजाम सरकार ने आर्य समाज को सत्याग्रह करने के लिए बाध्य कर दिया।

आर्य समाज के इस निर्णय से अन्य राजनैतिक दलों तथा साम्प्रदायिक संस्थाओं को बहुत पीड़ा हुई। इन्हें अपना नेतृत्व छिन जाने की वेदना सताने लगी। इस कारण आर्य समाज के इस सत्याग्रह को साम्प्रदायिकता का आवरण देने का असफल प्रयास किया। यह कटु सत्य है कि तुष्टीकरण ही इस देश के विभाजन का एक मात्र कारण सिद्ध हो चुका है। सत्यमेव जयते नानृतम्' और असत्यमेव न जयते' के मूल सिद्धान्त को मानने वाले उस आर्य समाज के सम्मुख न तो तुष्टीकरण रूपी नाग अपना फन ऊँचा कर पाया और न गिरगिट की तरह रंग बदलने वाली कुटिल चाल ही सफल हुई। इतना ही नहीं इन्हीं तत्वों के कारण आर्य समाज के प्रति लोगों की सहानुभूति को घटाने के स्थान पर बढ़ाया ही। आर्य समाज के नेताओं ने प्रारम्भ से ही इस बात को स्पष्ट कर दिया था कि यदि किसी हिन्दू राज्य में आर्य समाज पर इसी प्रकार की आपत्ति आती है जिस प्रकार की निजाम राज्य में आई थी, तो वे वहां भी इसी उपाय अर्थात् सत्याग्रह धर्म युद्ध का आश्रय लेते। आर्य समाज की घोषणा ने समाज और राष्ट्र के सम्मुख एक स्पष्ट और स्वच्छ विशाल मार्ग प्रस्तुत कर दिया। आर्य समाज ने दाहिने हाथ से कर्म किया तो बाएं हाथ में विजय श्री अपनी शोभा बढ़ाने लगी।

हां, जब आर्य समाज की सामनीति जब छः वर्ष पश्चात् भी सफल न हुई तब भी आर्य समाज निराश न हुआ। उन्होंने सर्वप्रथम समस्त आर्य जगत् की सम्मति ज्ञात करने के लिए दिसम्बर, 1938 के अन्तिम सप्ताह में शोलापुर में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का आयोजन इस 'नीति' के अनुसार था कि सम्भवतः निजाम सरकार के रवैऐ से आर्य समाज को सत्याग्रह न करना पड़े, किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ और उस निजाम की पूंछ पूर्ववत् टेढ़ी ही रही। अन्ततः आर्य सम्मेलन शोलापुर को अपने समस्त निश्चयों के अनुसार सत्याग्रह की घोषणा करना पड़ी। इसके सर्वप्रथम सर्वाधिकारी श्री महात्मा नारायण स्वामी जी बनाए गए। इन समस्त निश्चयों में निश्चय क्र. 3 में स्पष्ट कहा गया था - 'राज्य अथवा कर्मचारियों को न तो तबलीग शुद्धि मतान्तरण में भाग चाहिए न उसे प्रोत्साहन करना चाहिए। न जेलों में हिन्दू कैदियों तथा स्कूलों में हिन्दू बच्चों को मुसलमान बनाया जाना चाहिए और न हिन्दू अनाथ, मुसलमानों के सुपुर्द किए जाने चाहिए।'' (सन्दर्भ - आर्य डायरेक्टरी, 1942, प्र. 213)

इस विशाल सत्याग्रह के संचालन हेतु 'सत्याग्रह समिति' नियत की गई। चूंकि इस आन्दोलन के सम्बन्ध में मिथ्या और भ्रमपूर्ण बातें फैलाई जा रही थीं, इसलिए उद्देश्य की पवित्रता के लिए सत्य और अहिंसा का विशुद्ध रूप से पालन अत्यावश्यक कहा गया।

धर्म युद्ध की प्रथम आहुति

- निश्चयानुसार पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने दिनांक 29 अगस्त, 1939 को कतिपय सत्याग्रहियों के साथ हैदराबाद राज्य में प्रवेश किया। उन्हें प्रथमतः पकड़कर पुलिस निजाम राज्य के बाहर कर गई। किन्तु जब स्वामी जी ने पुनः वहां जाकर सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया, तब उन्हें पकड़कर एक साल के कारावास का दण्ड दिया गया। बस फिर क्या था, दावानल की भांति पूरे देश में जोश फैल गया और जनता बड़े से बड़े त्याग के लिए तैयार हो गई। आर्य समाज भी अंगड़ाई लेकर युद्ध के लिए ताल ठोंककर तैयार हो गया। सत्याग्रह के रहस्य को समझकर मार्च, 1939 में निजाम सरकार की ओर से समझौते की चर्चा प्रारम्भ हुई, किन्तु 9 अप्रैल, 1939 में शोलापुर में अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक हुई। इधर निजाम सरकार पीछे हट गई, इस कारण इसमें कोई विशेष गति नहीं आई।

उधर निजाम सरकार का दमन चक्र प्रबलता से घूमने लगा। ज्यों-ज्यों दमन चक्र बढ़ने लगा, त्यों-त्यों सत्याग्रह में उग्रता और तीव्रता बढ़ने लगी। इधर तुष्टीकरण की नीति वाले दलों ने इसके सम्बन्ध में अनेक भ्रांतियां फैलाना शुरू कर दीं। किन्तु जनता ने आर्य समाज की न्याय प्रियता, सत्यतापरक अहिंसा के मूल्य का आकलन करना शुरू किया, इस कारण 'तुष्टीकरण' की कुचालें निष्प्रभावी हो गई। अब इस धर्म युद्ध ने और भी व्यापकता प्रकट कर ली। कहते हैं - यह युद्ध इतना व्यापक और इतना प्रसिद्ध हो गया था कि उन दिनों देश की सार्वजनिक हलचलों में इसके सिवा और कोई हलचल सर्वोपरि न थी। सभी भाषायी तथा आंग्ल पत्रों में इस युद्ध के अतिरिक्त कोई चर्चा न थी। यह ध्यान रखने का तथ्य है कि देश के अग्रणियों की चिन्ता का कोई विषय था तो केवल यह युद्ध था।

यह युद्ध और इसकी चर्चा भारत की सीमा तक ही सीमित न रही वरन् समुद्र पार पार्लियामेण्ट के भवनों तक जा पहुंची।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आज्ञाओं और निर्देशों को आर्यजनता ने बड़ी तत्परता और सम्मान के साथ ग्रहण किया। यह एक ऐतिहासिक वस्तु बन गई। जब युद्ध अपने चरम पर था, उस समय 2,000 सत्याग्रही शिविरों में पड़े हुए आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। इनमें हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान तथा ईसाई बन्धु थे। हमारे अनुशासन एवं संयम की सभी आंग्ल पत्र तथा भाषायी पत्र भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। विशेषकर हिन्दू जनता ने आर्य समाज की विपत्ति को अपनी विपत्ति समझा और उसके निवारणार्थ उन्होंने आर्य समाज तथा आर्य समाजियों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाया और ऐसा कौन सा त्याग था जो उसने इस अवसर पर न किया हो।

'असत्यमेव न जयते' के अनुसार आर्य समाज रूपी श्रीकृष्ण का पांचजन्य शंख एक बार पुनः ध्वनित हो उठा और उसने विजय की घोषणा की। निजाम सरकार ने आर्य समाज के इस सत्याग्रह के सम्मुख घुटने टेक दिए और उसने 'सुधारों' की घोषणा की। यह घोषणा 20 जुलाई सन् 1939 को की थी। इसके पूर्व दिनांक 17 जुलाई, 1939 को निजाम सरकार ने अपना निर्णय प्रकट कर दिया था।

इस सत्याग्रह में कुल 10,579 सत्याग्रही जेल गए थे। इसके अतिरिक्त 2,000 सत्याग्रही वे थे जो 8-8-1939 से पूर्व केन्द्रों में पहुंच गए थे और आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इस प्रकार आर्य समाज द्वारा छेड़ा गया यह धर्म युद्ध जो कि अज्ञान, अन्याय और अभाव के विरूद्ध प्रारम्भ हुआ था, परमात्मा की कृपा सत्याग्रहियों के तप-त्याग तथा महान बलिदानियों के कारण सुखद अन्त के रूप में विजय श्री को प्राप्त कर सका। इन सभी श्रेष्ठ आत्माओं के प्रति आभार तथा प्रणाम।

- 'सुकिरण' अ-193, सुदामानगर, इन्दौर, (मध्य प्रदेश)

वार्षिकोत्सव एवं 22वे दुर्लभ शादर यज्ञ का निमन्त्रण

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्य। भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

प्रिय बन्धुओं यह इस दुर्लभ यज्ञ का चौथा व अन्तिम निमन्त्रण पत्र आप लोगों की सेवा में समर्पित कर रहा हूँ। यूं तो आप सभी लोग याजक है। अपने घरों, अपने परिवारों में नित्य अग्निहोत्र करने वाले है। जो कि बहुत अच्छी बात है। अपने परिवारों में नित्य यज्ञ करते रहें, महान कल्याण होगा। इसके बाद भी मैं बार–बार आप लोगों को इस यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित कर रहा हूँ। कारण जहां बड़े–बड़े यज्ञ हो रहे हों वहां भी कभी कभार जाना चाहिए। उनमें भी अपनी आहुतियां समर्पित करनी चाहिए उसका अपना विशेष महत्त्व है।

वेद्याः वेदिः समाप्यते, वर्हिषा वर्हिरिन्द्रियम्,
यूपेन यूपआप्यते प्रणीतोऽग्निः अग्निना।

यह वेद मन्त्र भी इसी ओर इंगित कर रहा है कि समूह में शक्ति है, अर्चना भी करनी हो तो वेद भगवान कहते है– सहस्त्रंसाकमर्चत सहस्त्रों की संख्या में अर्चना करो। इससे सफलता अवश्यम्भावी हो जाती है। उदाहरणों के साथ वेद भगवान कहते हैं– हे मनुष्यो जैसे वेद्याः–विद्ववान लोग यज्ञ से सम्बन्धित पदार्थो को लेकर वेदिः समाप्यते यज्ञवेद को प्राप्त करते हैं। यानि कि यज्ञशाला में जाकर सबके कल्याण के लिए श्रेष्ठतमम् यज्ञ कर्म को करके महान कल्याण को प्राप्त करते हैं। जैसे मनुष्य अपने वर्हिषा– महान पुरूषार्थ से वर्हिरिन्द्रियम महान पुरूषार्थ जन्य – धन को अर्थ रूप पुरूषार्थ को प्राप्त कर लेता है। जैसे यूपेन दृढ इच्छा शाक्ति वाले पृथग् पृथग् व्यक्ति समूह रूप में यूपः किसी एक दृढ शंकल्प के परिणाम को दृढ शंकल्प जन्य सफलता को प्राप्त कर लेते हैं। जैसे अग्निना – बिजली आदि अग्नियों से प्रणीत– सम्मिलित अग्निः सबके पथ प्रदर्शक सभी का कल्याण करने वाला आविस्कार विशेष सामने आ जाता है। ठीक वैसे ही तुम भी इकठे होकर साधनों से साधन मिलाकर सुख विशेष को प्राप्त करो।

प्रिय बन्धुओं – सुख व शान्ति का मूल कारण यह यज्ञ ही है। अपने घरो में, अपने अपने क्षेत्रों में यज्ञ करने वाले याजक जब समूह रूप में इस यज्ञ को विशाल रूप में करते है तो विशेष लाभ होता है, सत्वर लाभ होता है।

और– पूज्य चरणों के द्वारा आरम्भ किया गया यह यज्ञ बड़ा भी है, लम्बे समय तक चलने वाला है। अतः दुर्लभ है, कहीं अन्यत्र होता हुआ नहीं देखा गया है। महान कल्याणकारी इस दुर्लभ शादर यज्ञ का फल हम सभी को, आप सभी को प्राप्त हो इसी कामना से इस यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए अपनी आहुतियां समर्पित करने के लिए आप लोगों को बार–बार आमन्त्रित करता हूं। अतः आओ हम सब मिलकर इस महान यज्ञ अभियान को सम्पन्न करें। अतः एक बार पुनः निवेदन कर रहा हूँ, साग्रह निवेदन कर रहा हूं आप लोग इस यज्ञ में आवें अवश्य आवें। अथवा इसकी सम्पन्नता के लिए अपना–अपना अशंदान, सहयोग राशियां अवश्य ही भेजें। ईश्वर सबका कल्याण करें। धन्यवाद

सहयोग राशियाँ निम्नलिखित बैंक खाते में भेजें :–
बैंक – स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
नाम – दयानन्द मठ चम्बा
खाता न0–11149833806
IFSC-SBIN0000626

यज्ञ में आने वाले संन्यासी एवं विद्वत्जन

जिन्होंने अपना आशीर्वाद देना कर्तव्य समझा

1. परम श्रद्धेय स्वामी आर्यवेश जी
   सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
2. पूज्य स्वामी आदित्यवेश जी, – संचालक मिशन आर्यवर्त
   प्रबन्धक, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली हरियाणा

वे स्वर सम्राट

जिन्होंने –इस यज्ञ को अपने संगीत के झंकारी से झंकृत करने का उत्तरदायित्व जिन स्वर सम्राटी में स्वीकार किया है वे हैं श्री राजेश अमर प्रेमी जी जालन्धर तथा श्री संदीप आर्य जी पानीपत

इनके मनोरथ में सहायक स्थानीय मधुर गायक

1. पं. संदीप आर्य जी (पानीपत), 2. श्री सुनील कुमार जी शास्त्री, 3. श्री संजय कुमार जी शास्त्री, 4. श्री मनोज कुमार जी शास्त्री, 5. श्रीमती सरस्वती देवी जी, 6. श्रीमती नीतू आर्या जी।

वेदपाठी

महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्र व छात्राएं।

आमन्त्रित	स्वागतकर्ता	प्रबन्धककर्ता
आप सभी देव व देवियां	हम सभी आश्रमवासी	स्वामी सुमेधानन्द
	दयानन्द मठ प्रबन्धक	शिष्यमंडल
	समिति के सदस्य	चम्बा

तथा महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के सभी सदस्यगण व छात्र

कार्यक्रम समय सारिणी

23 से 25 सितम्बर, 2022

प्रातः 6 से 6.30 तक यज्ञ, 6.30 से 7.30 आध्यात्मिक चर्चा, अल्पाहार (नाश्ता) : 8 से 8.30 बजे तक, यज्ञ – 9 से 10.30 बजे तक, भजन 10.30 से 11.30 तक, उपदेश–11.30 से 12.30 तक, सायं 3.30 पर चाय, 4 से 5.30 बजे तक यज्ञ, 5.30 से 6.30 बजे तक भजन, 6.30 से 7 बजे तक उपदेश, 7 से 7.15 तक संन्ध्या व शांति पाठ।

26 सितम्बर, 2022

प्रातः 5:30 से 6 बजे तक चाय, 6.30 से ब्रह्मयज्ञ के साथ ही स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित दुर्लभ शारद यज्ञ का शुभारम्भ।

27 सितम्बर, 2022

प्रातः 10 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति। 10 से 12 बजे तक भजन उपदेश, 12.30 बजे से ऋषि लंगर प्रारम्भ।

– आचार्य महावीर सिंह
दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०),
सम्पर्क सूत्र –94180–12871

आर्य समाज जोरबाग, नई दिल्ली के तत्वावधान में योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज का जन्मोत्सव भव्यता के साथ मनाया गया

योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज इतिहास में सबसे बड़े राजनीतिज्ञ थे – डॉ सत्यपाल

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी महाराज पर अनर्गल प्रलाप का खण्डन करें आर्यजन – डॉ. वेद प्रताप वैदिक

नई दिल्ली, 22 अगस्त, 2022 आर्य समाज जोर बाग, नई दिल्ली के तत्वावधान में कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज का अलौकिक गुणगान कार्यक्रम आयोजित किया गया। दक्षिण दिल्ली की विभिन्न आर्य संस्थाओं के सैकड़ों प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों ने उत्साह और उल्लास के साथ भाग लिया।

आर्य समाज के प्रधान श्री हरीश धवन, श्री महेन्द्र जेटली, श्री संजय गांधी और पुरोहित पं श्याम बिहारी ने यज्ञ सम्पादन करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

समारोह में बतौर मुख्य अतिथि सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ सत्यपाल सिंह जी ने कहा कि श्री कृष्ण योगीराज थे तथा संसार के इतिहास में सबसे बड़े राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, कूटनीतिज्ञ और धर्म के रक्षक थे। उनके जन्मदिवस पर रासलीला रचाकर अद्वितीय महापुरुष पर झूठे दोष आरोपित करना अक्षम्य अपराध है। हमें प्रण करना होगा कि हम पतित अन्यायी बलवान का साथ न देकर न्यायप्रिय चरित्रवान व सत्यवादी के ही साथ खड़े होंगे। बेशक वह निर्बल व निर्धन हो यही श्री कृष्ण का अनुकरण है। योगीराज श्री कृष्ण जी महाराज द्वारा दिखाये गये पथ चलकर ही संसार का उपकार किया जा सकता है।

समारोह का संचालन करते हुए आर्य समाज के प्रवक्ता डॉ विद्या प्रसाद मिश्र ने दावा किया कि राधा नाम की कोई महिला थी ही नहीं। यह एक मण्डली का नाम था जिसका नेतृत्व श्री कृष्ण जी ने किया। बाहर से अध्यात्म प्रसार और अन्दर ही अन्दर कंस के समापन की योजना राधा नामक संस्था में परिपक्व हुई।

मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक जी ने प्रेरक विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम हिन्दू लोग अपनी हर बुराई को अपने अवगुणों को तर्कसंगत और उचित सिद्ध करने के लिए आप्त पुरुषों और देवी–देवताओं पर मनमाने क्षूठे आरोप लगाते रहते हैं। शराब, गांजा आदि नशा देवी और देवता को चढ़ाकर प्रसाद रुप में पीते–खाते हैं तथा पिलाते व खिलाते हैं। इतना ही नही व्यभिचारी और भेगातुर भक्त योगेश्वर श्री कृष्ण के जीवन को क्षूठे आरोपों यथा अनेक गोपियाँ (पत्नियाँ) उनके जीवन के साथ जोड़कर पाप के भागी बनते हुए अपनी कामेच्छा को तर्क संगत सिद्ध करने का घिनौना कुप्रयास करते हैं। महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम श्री कृष्ण जी पर लगाए गए नापाक दोषों का ज़ोरदार खण्डन करते हुए उन्हें मानवता का उद्धारक परमयोगी बताया।

इस अवसर पर दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री, आर्य नेता श्री सतीश चढ्ढा, श्री अनिल आर्य, श्री रविन्द्र कुमार, श्री आदित्य मिश्र, श्री मती वीना धवन, श्री हरिवंश डकल, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री अशोक योगाचार्य, श्री शैलेश कुमार सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

इस अवसर पर योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज के जीवन पर सुन्दर कथा आर्य रविदेव गुप्त जी द्वारा प्रस्तुत की गई। समारोह की आध्यक्षता श्री बिज गौरव खोसला ने किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा पं. राजगुरु की 114वीं जयन्ती ऑन संगोष्ठी आयोजित करके मनाई गई

प. राजगुरु का बलिदान युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत – अनिल आर्य

बुधवार 24 अगस्त, 2022 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में "मेरा राष्ट्र–मेरा अभिमान" विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी व अमर शहीद पं. राजगुरु की 114वीं जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उल्लेखनीय है कि अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव को 23 मार्च, 1931 को लाहौर में एक साथ फांसी दी गई थी।

मुख्य वक्ता डॉ. कल्पना रस्तोगी ने कहा कि किसी भी व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके अपने राष्ट्र से ही होती है, क्योंकि हमारा अस्तित्व इसी से जुड़ा है, यदि हमारा राष्ट्र सुरक्षित है तो उसमें हम भी सुरक्षित हैं और हमारा राष्ट्र फलेगा, फूलेगा तो हमें भी फलने–फूलने, आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे। जिस प्रकार हमारी रगों में खून दौड़ता है, उसी प्रकार राष्ट्र भक्ति का विचार भी हमारी रगों में दौड़ना चाहिए। परन्तु प्रायः देखा जाता है कि जब भी कोई राष्ट्रीय पर्व आता है तो खून में राष्ट्र भक्ति का उबाल आ जाता है और धीरे–धीरे यह शांत भी होने लगता है। हम पूर्व की भांति अपने–अपने कार्यों में, व्यवसायों में व्यस्त हो जाते हैं, लेकिन मेरे विचार से इन राष्ट्रीय पर्वों का स्वरूप कुछ रचनात्मक होना चाहिए – जैसे इन पर्वों को कुछ इस तरह मनाया जाए कि कुछ विचारशील लोग अपने मित्रों, सहकर्मियों आदि के साथ बैठें और राष्ट्र की समस्याओं पर ध्यान दें, उनसे मुक्त होने के लिए क्या किया जा सकता है, हम अपना क्या योगदान दे सकते हैं आदि विषयों पर विचार गोष्ठियाँ करें, लेख लिखें लोगों को जागरूक करें, जिनमें समाज के हर वर्ग की हिस्सेदारी हो, साथ बैठकर, कुछ समाधान ढूंढे जाएँ तो मेरे विचार से इन पर्वों को मनाने की सार्थकता अधिक होगी क्योंकि राष्ट्र तो हम सबका है, परन्तु कुछ प्रतिशत लोग आज भी ऐसे अवश्य हैं जिनके मन में देश की परिस्थितियों को सकारात्मक रूप से बदलने के विचार निरंतर हिलोरें मारते रहते हैं। ये वे लोग हैं जिनके माता–पिता ने उनमें राष्ट्र प्रेम की लौ जगाई है। मैं बहुत ही गर्व से कहना चाहती हूँ कि जो सच्चे आर्य परिवार हैं, उनके रगों में आज भी देशभक्ति भरी पड़ी है। क्योंकि हमारे समाज के प्रवर्तक ही महर्षि दयानन्द एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे, जिन्होंने स्वराज्य पाने की अलख जगाई। आज भी सबसे अधिक राष्ट्र चिंतन यदि किसी समाज में होता है तो वह आर्यसमाजों में ही होता है। भारत देश की अमूल्य धरोहरें वेद, पुराण, महाभारत, रामायण, गीता जैसे शाश्वत ग्रंथों पर, ऋषि संस्कृति पर, भारत की अभूतपूर्व और गौरवमयी गरिमा पर बात यहीं होती है। राष्ट्र की बात हो तो हमारे महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का नाम लिए बिना नहीं रहा जा सकता। जिन्होंने कहा – अपि स्वर्णमयी लंका न में रोचते लक्ष्मण। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। अर्थात हे लक्ष्मण ये लंका भले ही स्वर्ण निर्मित है, परन्तु इस सोने की लंका में भी मेरी कोई रुचि नहीं है। मेरे लिए तो मेरी मातृभमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। ये थे राष्ट्रीय चेतना के स्वर और श्री कृष्ण ने जीवन भर राष्ट्र धर्म निभाया, राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य किया। आज 'राष्ट्र प्रथम' की अपेक्षा 'स्वार्थ प्रथम' की भावना पनप रही है जिस पर रोक लगनी चाहिए। अपने राष्ट्र को आगे बढ़ने के लिए हमें विदेशी वस्तुओ का मोह और प्रयोग छोड़ना ही होगा। हमें भ्रमण के लिए अन्य स्थानों के साथ–साथ ऐसे ऐतिहासिक स्थलों पर अवश्य जाना चाहिए जहाँ से हमारा गौरवपूर्ण इतिहास जुड़ा हो। एक–दूसरे से जितना भी सम्भव हो अपनी मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा में ही संभाषण करें। यदि हम ही अपनी भाषा अपनी संस्कृति का सम्मान नहीं करेंगे तो दूसरों से क्या अपेक्षा कर सकते हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा कि यह राष्ट्र की स्वतंत्रता शहीदों के बलिदान से ही मिली है प. राजगुरू जी का आज 114वाँ जन्मदिन है, हमारे लिए उनके बलिदान को याद कर प्रेरणा लेने का दिन है विशेष कर युवाओं को उनसे प्रेरणा लेकर राष्ट्र रक्षा का संकल्प लेना चाहिए।

मुख्य अतिथि गायत्री मीणा (मंत्री आर्य समाज नोएडा) व श्री सुरेश हसीजा ने भी अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि राष्ट्र रहेगा तो हम सब रहेंगे। कई लोगों ने देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किये।

सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय, साधु आश्रम अलीगढ़ में उत्तर प्रदेश सरकार की योजना के अन्तर्गत स्मार्ट फोन 'टैबलेट' का वितरण समारोह

दिनांक 30 अगस्त, 2022 को श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम अलीगढ़ उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित योजना युवाओं के तकनीकी सशक्तिकरण हेतु स्मार्टफोन टेबलेट वितरण योजना का कार्यक्रम हुआ जिसमें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती विजय सिंह अध्यक्ष जिला पंचायत अलीगढ़ एवं विशिष्ट अतिथि शैलेंद्र कुमार यादव मंडलीय संस्कृत विद्यालय निरीक्षक रहे कार्यक्रम का शुभारंभ ईश्वरीय वाणी पवित्र वेद मंत्रों के उच्चारण हुआ महाविद्यालय के छात्रों ने श्लोक संस्कृत गीतों द्वारा उपस्थित जनसमूह को संस्कृत भाषा रही है छात्रों के उज्जवल भविष्य को बनाने के लिए शिक्षा में गुणवत्ता ला रही है मुख्य अतिथि द्वारा छात्र–छात्राओं को शास्त्री तृतीय खंड के 20 छात्रों को स्मार्टफोन तथा आचार्य द्वितीय खंड के 22 छात्रों को टेबलेट दिए गए टेबलेट स्मार्टफोन प्राप्त कर छात्र–छात्राएं प्रश्न मुद्रा में प्रतीत हुई नोडल अधिकारी विन्नामी सिंह प्राचार्य जीवन सिंह टीकम सिंह अमित गर्ग ने अभ्यागत ओं का स्वागत किया कार्यक्रम मैं समाजसेवी ठाकुर वीरेंद्र सिंह धर्मेंद्र चौहान ग्राम प्रधान पर उखलाना गौरव चौहान ओमकार सत्यपाल राम खिलाड़ी मुकेश चंद्र धर्मवीर सिंह जितेंद्र कुमार शर्मा आदि उपस्थित रहे।

सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय, साधु आश्रम अलीगढ़ में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

दिनांक 5 सितम्बर, 2022 सोमवार को श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम अलीगढ़ उत्तर प्रदेश में शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया जिसमें सर्वप्रथम विद्यालय के छात्रों और आचार्यों ने सामूहिक यज्ञ किया।

तदोपरान्त प्राचार्य डॉ. जीवन सिंह जी की अध्यक्षता में डॉ. राधाकृष्ण सर्वपल्ली पूर्व राष्ट्रपति जी के जन्मदिवस को शिक्षक दिवस के रूप में गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी उपस्थिति रहे।

गोष्ठी में सर्वप्रथम महाविद्यालय के आचार्यों ने शिक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए गुरुकुली शिक्षा पद्धति की विशेषताओं को विस्तार से समझाया। स्वामी जी ने डॉ. सर्वपल्ली जी के जीवन पर प्रकाश डाला और अध्यापक एवं छात्रों के सम्बन्धों के महत्त्व को समझाया और कहा कि आचार्य ईश्वर के समान पूजनीय और आदरणीय होता है। आचार्य ही छात्र को आचारवान बनाता है और शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति के साधनों का ज्ञान कराता है। अन्त में प्राचार्य डॉ. जीवन सिंह जी ने सबका सम्मान और आदर सत्कार करते हुए आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में श्री वेन्तभी सिंह, श्री भीकम सिंह, श्री अमित गर्ग, श्री सत्यपाल सिंह, श्री ओंकार सिंह, श्री मनवीर सिंह, श्री मुकेश चन्द आदि ने भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

– प्राचार्य डॉ. जीवन सिंह

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–9868211979

शुभ सूचना — ओ३म् — शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/– रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689
ई-मेल : *sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in*

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।